कोविड-19 और एकात्मता की अद्वैत दृष्टि

आज पूरी दुनिया कोविड-19 नामक महामारी की चपेट में है। महामारियाँ तो पहले भी दुनिया में आती रही हैं और मनुष्य अपना बचाव करने में सफल भी होता रहा है। आशा है कि इस बार भी मनुष्य जीतेगा और करोना हारेगा। परन्तु करोना वायरस से फैली यह महामारी पहले की महामारियों से कुछ मायने में भिन्न है। पहले की महामारियाँ निरपवाद रूप से प्राकृतिक अशुभ (Natural Evil) हुआ करती थीं, लेकिन इस महामारी के पीछे यह आशंका जतायी जा रही है कि यह मानव कृत नैतिक अशुभ (Moral Evil) है। यदि यह सही है तो इसे द्वैत दृष्टि में मूलित सार्वभौमिक वर्चस्व को प्राप्त करने का दुर्दान्त अहंकार ही कहा जाना उचित होगा। इससे पहले की महामारियाँ मनुष्य को तीव्र गति से मृत्यु के कराल गाल में झोंक देती थीं, और उसके फैलने की रफ्तार कम होती थी। परन्तु करोना वायरस मनुष्य को धीरे-धीरे मारता है और इसके फैलने की गति बहुत तेज है। इसलिए मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर इसकी प्रभावमत्ता इतनी अधिक है कि विश्व इतिहास में संभवत: यह पहली घटना है, जिसका संज्ञान पूरे विश्वभर में एक साथ लिया गया है। किसी घटना का वैश्वीय स्तर पर संज्ञान में लिया जाना एक प्रकार की वैश्वीय एकजूटता को दर्शाने वाली पहल है।

परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि इस वैश्वीय एकजूटता में अन्दर ही अन्दर न केवल राष्ट्रवादी अलगाव के खतरे बढ़ रहे हैं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से अलग-थलग रहने के लिए विवश कर दिया गया है। इससे बचाव के लिए ''सामाजिक दूरी'' बरतने के नाम पर यह मनुष्य का मनुष्य से बहुत बड़ा अलगाव- बिलगाव है। यद्यपि सामाजिक दूरी शब्द, बिना विचारे ही बहुत अधिक प्रचलन में आ गया, जबकि होना चाहिए था "सम्पर्क दूरी"। परन्तु सम्पर्क दूरी भी अंतत: सामाजिक दूरी को बढ़ा ही देती है। यही कारण है कि वैसे सभी संसाधनों, संस्थाओं और उपक्रमों को कुछ समय के लिए लॉक डाउन कर दिया गया है, जिनके माध्यम से मनुष्य का मनुष्य से, फिर दुनिया के एक बड़े भाग से संपर्क साधा जाता था। यह परोक्ष-अपरोक्ष, भौतिक संपर्क की सघनता और विस्तार ही द्वैतवादी, भौतिकवादी आधुनिक जीवनशैली की सबसे बड़ी खासियत है। अपनी चेतना को वैयक्तिक अहं तक सीमित करता हुआ अपने शरीर के हद को पार कर मनुष्य इस परोक्ष-अपरोक्ष भौतिक सम्पर्क को जितना विस्तारित करता है, वह उतना ही द्वैतवादी, भौतिकवादी आधुनिक जीवन शैली का भागीदार बन पाता है। आज की

परिभाषा में जीवन के उन क्षेत्रों को पिछड़ा माना जाता है, जहां भौतिक संपर्क के विस्तार की परिधि अपेक्षाकृत कम होती है, परंतु देखने लायक बात यह है कि यह महामारी भी उन्हीं भौतिक संपर्क सूत्रों पर सवार होकर पूरी दुनिया में फैली है। इतना ही नहीं मनुष्य के जीवन की आधुनिक बनावट में भौतिक संपर्क सूत्र जहां जितने सघन हैं, इस महामारी का प्रकोप भी उन क्षेत्रों में उतना ही अधिक है। अत: यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि कोविड-19 आधुनिक सभ्यता की महामारी है। इसलिए बचाव के तौर पर आधुनिक जीवन को गतिशील और संचालित करने वाले उपक्रमों एवं संसाधनों को थोड़े समय के लिए बंद करना पड़ा है।

इस स्थगन से एक ओर दुनिया को बहुत बड़ी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी है, तो दूसरी ओर भूमण्डलीय स्तर पर पर्यावरण पर जो धनात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा है तथा रोजमर्रे की दुर्घटनाओं और अतिचार में जो कमी आई है, उसकी तुलना में करोना वायरस से होने वाली मानवीय क्षति बहुत कम है। इसका मतलब है कि आधुनिक सभ्यता की द्वैतवादी और भौतिकवादी गतिशीलता अपने आप में किसी महामारी से कम नहीं।

मजबूरन ही सही, हम सबों ने इस दौरान आधुनिक सभ्यता के भौतिकवादी जीवन शैली के अतिचार का अनुभव अवश्य किया है। करोना वायरस चाहे कृत्रिम हो अथवा चमगादड़ के जूस पीने की मानवीय दरिन्दगी- दोनों ही स्थितियों में यह आधुनिक मनुष्य और द्वैतवादी जीवन शैली का अतिचार ही है। क्या हम इस मूल्यवान अनुभव से संकट की इस घड़ी में कोई सीख लेंगे और उतर करोना विश्व में द्वैत, भेद, स्पर्धा और वर्चस्व पर आधारित शरीरपूरित जीवन दर्शन को त्याग कर भगवत्वाद आचार्य शंकर के सर्वात्मबोध को अंगीकार करते हुए आत्मपूरित जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करेंगे? यदि हम ऐसा नहीं कर पाए तो वायरस महामारी फैलाते रहेंगे, दुनिया वैक्सीन भी खोजती-बनाती रहेगी, परन्तु समस्या यूं ही चलती रहेगी, उसका निदान नहीं हो पाएगा। यदि यह आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली की महामारी है, तो हमें उस जीवन शैली को भी बदलना होगा, जिसमें इस प्रकार के वायरस या तो पैदा होते हैं या फिर जान-बूझकर पैदा किए जाते हैं। आधुनिक जीवनशैली में कुछेक व्यक्तियों की ऐसी मनोवृत्ति जो स्वयं को करोना संक्रमण का संवाहक बनाना चाहते हैं, वही मनोवृत्ति शक्ति संपन्न होने पर करोना जैसे वायरस का निर्माण भी कर सकती है। करोना वायरस से उत्पन्न सामाजिक संकट से निदान पाने के लिए द्वैत दृष्टि और द्रोह दृष्टि का अद्वैत दृष्टि और अद्रोही मनोवृत्ति में रूपान्तरण आवश्यक है।

परन्तु आज तो यह संकट उत्पन्न ही हो गया है। पूरी दुनिया उसका सामना करने के लिए विवश है। तब यह प्रश्न उठाना आवश्यक हो जाता है कि भगवत्वाद आचार्य शंकर की एकात्मतावादी अद्वैत दृटि किस प्रकार करोना संकट से बचाव की एक कारण सोशल वैक्सीन हो सकती है? वास्तव में देखा जाए तो एकात्मता दृष्टि के अतिरिक्त कुछ और सोशल वैक्सीन हो भी नहीं सकती, क्योंकि एकात्मता दृष्टि ही सेल्फ क्वॉरेंटाइन का दर्शन है। दृष्टव्य है कि करोना क्रायसिस में प्राथमिकता अपने को बचाना नहीं बल्कि दूसरों को बचाना है। इसलिए संक्रमित व्यक्ति को क्वॉरेंटाइन किया जाता है। दूसरों को बचाने की चेतना एकात्मता बोध में मूलित आत्मचेतना होती है। इस बोध के अभाव में संक्रमित व्यक्ति को मानो जेल में बंद कर ही दूसरों को बचाया जा सकता है। अत: सेल्फ कॉन्शियस क्वॉरेंटाइन ही यदि करोना संकट से बचाव का एक मात्र सोशल वैक्सीन है, तो इसके पीछे का सक्रिय दर्शन आत्मौपम्यता, एकात्मता का अद्वैत बोध ही है।

अम्बिकादत्त शर्मा
दर्शनविभाग,
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)- 470003